JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# बौद्धिक और विकासात्मक अक्षमता वाले बच्चों के लिए 'स्पेशल ओलंपिक खेल'

## 'Special Olympic Games' for Children with Intellectual and Developmental Disabilities

**Mr.SANTOSH KUMAR**

**सारांश**

प्रस्तुत प्रकरण में विशेष शिक्षा के तहत विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को स्कूल, परिवार और समाज के अनुकूल समायोजित करने का प्रयास किया जाता है ताकि वे अपने दिन–प्रतिदिन की समस्याओं को हल करने में सक्षम हो सके I और बौद्धिक और विकासात्मक अक्षमता वाले बच्चों के खेल को परिभाषित किया गया है जिसके अंतर्गत दिव्यांग बच्चों के शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक विकास होता है, जिसकी आवश्यकता सभी प्रकार के दिव्यांग बालक को है जिसकी जागरूकता के लिए प्रस्तुत किया गया है प्रकरण में स्पेशल ओलंपिक खेल की आवश्यकता को बताया गया है स्पेशल ओलंपिक खेल एक एथलेटिक प्रतियोगिता है जिसे ओलंपिक खेलों के बाद बनाया गया था लेकिन लेकिन यह मानसिक या शारीरिक रूप से दिव्यांग व्यक्तियों के लिए है I दिव्यांग बच्चों के शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक विकास के लिए जिस प्रकार शिक्षा की आवश्यकता है उसी प्रकार खेल की भी आवश्यकता होती है I दिव्यांग बच्चों या व्यक्तियों के लिए खेल को मुख्यतः दो भागों में बाँटा गया है जो निम्न है –पैरालाम्पिक खेल, स्पेशल ओलंपिक खेल I स्पेशल ओलंपिक मौसम के अनुरूप दो प्रकार के होते है शीत ऋतु एवं ग्रीष्म ऋतु में आयोजित होते है I

**मुख्य विन्दु :– विशेष शिक्षा , दिव्यांग व्यक्ति , बौद्धिक अक्षम बालक , स्पेशल ओलंपिक खेल**

**परिचय**

मानव जीवन में शिक्षा की अहम् भूमिका है I यह तो निर्विवाद सत्य है कि जीवन की पूर्णता एवं समाज की प्रगति में शिक्षा का योगदान रहा है I शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति के व्यवहार एवं आचरण में बदलाव आता है I व्यक्ति के संवेदनशीलता एवं दृष्टि को व्यापक तथा प्रखर बनाना भी शिक्षा के प्रत्यक्ष रूप को दर्शाता है I शिक्षा के आभाव में मानव जीवन कल्पना से परे है I जीवन की उद्दता, उच्चतम, सौन्दर्य एवं उत्कृष्टता शिक्षा द्वारा ही संभव है I शिक्षा शब्द संस्कृत की 'शिक्ष' धातु से बना है जिसका अर्थ है सीखना और सिखाना I शिक्षण शब्द अब शिक्षण के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा है किंतु अपने मूल अर्थ में यह सीखना और सिखाना और शिक्षण दोनों है I शिक्षा शब्द में भी दोनों भाव निहित है I सीखने का अर्थ में प्राय: शिक्षा प्राप्त करना और सीखाने के अर्थ में शिक्षा प्रदान करना है I हिंदी में एक अन्य प्रचलित शब्द है विद्या I विद्या संस्कृत भाषा का शब्द है और यह 'विद' धातु से निकला है I जिसके अनेक अर्थ हैं I ज्ञान के विद अर्थ में वेत्ति वेद आदि शब्द इसी से बनते हैं सत्ता के अर्थ में विद्यते रूप चलता है और विद्वान या सोचने, विचारने के अर्थ को व्यक्त करता है I इस प्रकार 'विद' के कम से कम पांच अर्थ है – ज्ञान, वास्तविकता, उपलब्धि, विचारक, और श्रेष्ठ भावनाएं है I शिक्षा अंग्रेजी शब्द के 'एजुकेशन' का हिंदी रूपांतर है I शिक्षा शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के तीनशब्दों एडूकेटम, ऐडूसीयर तथा एडुकेयर से हुई है I लैटिन भाषा में इन तीनो शब्दों का अर्थ क्रमशः 'विकसित करना', 'आगे बढ़ना' तथा 'बाहर निकालना' है I लैटिन भाषा का एडूकेटम शब्द दो शब्दों एडू + केटम से मिलकर बना है I एडू का अर्थ है – 'अंदर से' तथा केटम अर्थ है– 'अग्रगति देना' या 'आगे बढ़ाना' I शिक्षक शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द टीचर का हिंदी अनुवाद जैसा प्रतीत होता है I यानी एक ऐसा व्यक्ति जो शिक्षण का कार्य करता है I सीखने सिखाने की प्रक्रिया को सहजता और विशेषज्ञता के साथ करता है I शिक्षक बच्चों के चौमुखी विकास में सहायता प्रदान करता है I शिक्षक बच्चों के लिए रोल मॉडल का कार्य करता है, शिक्षक बच्चों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन ला कर एक अच्छे समाज की स्थापना में अपना योगदान देता है I तथा बच्चा बहुत से लोगों को अपने शिक्षक की बात मानता हुआ उनके इशारे पर किसी काम को करते हुए और नेतृत्व करते हुए देखता है तो भीतर ही भीतर प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता है I ऐसे में जरूरी है कि उस की शिक्षक योग्य हो और अपने काम को पूरी विशेषज्ञता तन्मयता और प्रभावशीलता के साथ करें I वह अपने छात्र–छात्राओं को बच्चों जैसे स्नेह देता है और चुनौतियों का समाधान करने और खुद से बाहर आने का संघर्ष करने की स्वायत्ता और स्वतंत्रता भी सिखाता है I विशेष शिक्षक से तात्पर्य ऐसे शिक्षक से है जो सामान आवश्यकता वाले बच्चों के अतिरिक्त विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को प्रशिक्षण प्रदान करते हैं एवं उनकी आवश्यकता के अनुरूप शिक्षण विधियों का प्रयोग करके ऐसे बच्चों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है I शिक्षक की भूमिका एक ऐसे कोच की भांति है जो ओलंपिक जैसे किसी कड़ी प्रतिस्पर्धा वाले खेल के लिए अपने

बच्चों को तैयार करता है मगर यह भी जानता है कि इस खेल में हर किसी को एक ही मंजिल पर नहीं जाना है I इनमें से बहुत से हैं जो अच्छे दर्शक बनेंगे, इनमें वह भी है जो लेखक बनेंगे, आदि इसलिए वह अपनी छात्र–छात्राओं की क्षमता पर भरोसा करता है और उन्हें अपने जीवन में संघर्ष करने और अपने सपनों को जीने व उनको प्राप्त करने के लिए सदैव प्रोत्साहित करता रहता है I दिव्यांगता या निःशक्तता वह है जिसमे किसी व्यक्ति के हाथ, पैर या आँखों से न दिखना, कानों से सुनाई न देना आदि I अर्थात दिव्यांगता एक व्यापक शब्द है जो किसी व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक विकास में किसी प्रकार की कमी को इंगित करता है I इसके लिए दिव्यांगता या निःशक्तता, अशक्तता, अक्षमता आदि शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है I

दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 के आधार पर दिव्यांगता या निःशक्तता को 21 प्रकार में बाँटा गया है –

1. गतिविषयक दिव्यांगता (लोकोमोटर डीसीबीलिटी
2. दृष्टिबाधित
3. अल्पदृष्टि
4. श्रवणबाधित
5. बौद्धिक अक्षमता
6. स्वलीनता
7. मानसिक बीमारी
8. प्रमस्तिश्कीय पक्षाघात
9. अधिगम अक्षमता
10. अधिरक्त स्राव
11. बौनापन
12. मांसपेशिय दुर्विकास
13. स्पेसिफिक अधिगम अक्षमता
14. थेलेसेमिया
15. सिक्कल कोशिका रोग
16. तेजाब हमला पीड़ित
17. हेमोफिलिया
18. पार्किसन रोग
19. बहुस्कोलोरोसिस
20. मूक निःशक्तता
21. बहुदिव्यांगता

**दिव्यांग बच्चों या व्यक्तियों के लिए खेल**

दिव्यांग बच्चों के शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक विकास के लिए जिस प्रकार शिक्षा की आवश्यकता है उसी प्रकार खेल की भी आवश्यकता होती है I दिव्यांग बच्चों या व्यक्तियों के लिए खेल को मुख्यतः दो भागों में बाँटा गया है जो निम्न है –

1. पैरालाम्पिक खेल
2. स्पेशल ओलंपिक खेल

1. **पैरालाम्पिक खेल** – पैरालाम्पिक खेल एथलीटों की एक बड़ी अंतराष्ट्रीय मल्टीसपोर्ट खेल है जिसमे असुविधा जनक मांसपेशियो की शक्ति (जैसे – पैराप्लेजिया और क्वाड्रीप्लेजिया मांसपेशी डिस्ट्राफी, पोस्ट – पोलियो सिंड्रोम, स्पाइनाबाइफीडा) आदि से ग्रस्ति व्यक्तियों के लिए पैरालाम्पिक खेल आयोजित होते है I पैरालाम्पिक एथलीटों की विभिन्न प्रकार की दिव्यांगता को देखते हुए एथलीटों प्रतिस्पर्धा करने वाली कई श्रेणियां है जैसे अंग की कमी, हाइपरटोनिया, एटेक्सिया, दृष्टिविकार आदि अतः पैरालाम्पिक खेलों के समानांतर में व्यवस्थित किया जाता है I जब की आइ ओ सी मान्यता प्राप्त स्पेशल ओलम्पिक विश्व खेलों में बौद्धिक दिव्यांगता वाले एथलीट शामिल होते है I

2. **स्पेशल ओलंपिक खेल –** स्पेशल ओलंपिक बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों और वयस्कों के लिए दुनिया का सबसे बड़ा खेल संगठन है जो सालाना प्रशिक्षण और प्रतियोगिताओं को 5 मिलीयन एथलीटों 172 देशों में एकीकृत राज्य खेल भागीदारों को प्रदान करता है I स्थानीय ओलंपिक प्रतियोगिताओं को संसार भर में स्थानीय राष्ट्रीय और क्षेत्रीय प्रतियोगिताओं सहित हर साल आयोजित किया जाता है I जिसमें सालाना एक लाख से ज्यादा कार्यक्रम शामिल होते हैं I अंतर्राष्ट्रीय पैरालाम्पिक समिति की तरह स्पेशल ओलंपिक संगठन अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति द्वारा मान्यता प्राप्त है जिसमें सालाना एक लाख से ज्यादा कार्यक्रम शामिल होते हैं अंतर्राष्ट्रीय पैरालाम्पिक समिति की तरह स्पेशल ओलंपिक संगठन अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति द्वारा मान्यता प्राप्त है हालांकि पैरालाम्पिक खेलों के स्पेशल ओलंपिक खेलों के समायोजन के साथ नहीं आयोजित किया जाता है I स्पेशल ओलंपिक के वर्ल्ड गेम स्पेशल ओलंपिक द्वारा

आयोजित एक प्रमुख कार्यक्रम है 2 साल के चक्करों में हर चौथे वर्ष में आवर्ती ग्रीष्मकालीन और शीतकालीन खेलों के बीच विश्व खेलों के ओलंपिक पहला गेम 20 जुलाई 1968 को शिकागो एलगोयिस आयोजित किया गया था जिसमें अमेरिका और कनाडा के लगभग 1000 एथलेटिक थे I पैरालाम्पिक खेलों में स्पेशल ओलंपिक विश्व खेलों में बौद्धिक अक्षमता वाले एथलेटिक शामिल होते हैं I स्पेशल ओलंपिक के लिए अहर्ता प्राप्त करने के लिए किसी व्यक्ति को कम से कम 8 वर्ष का होना चाहिए किसी एजेंसी या पेशेवर द्वारा निम्नलिखित शर्तों में से एक के रूप में पहचाना जाना चाहिए बौद्धिक अक्षमता संज्ञानात्मक विलंब जो औपचारिक मूल्यांकन द्वारा मापा जाता है या महत्वपूर्ण सीखने या व्यवसायिकरण के कारण संज्ञानात्मक देरी की आवश्यकता होती है या विशेष रूप से डिजाइन किए गए निर्देश की आवश्यकता होती है I यह बौद्धिक क्षमता वाले युवाओं के लिए स्पेशल ओलंपिक में एक युवा एथलीट कार्यक्रम है – एक समावेशी खेल और खेलने का कार्यक्रम जो मानसिक और शारीरिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है I बच्चे मोटर कौशल और हाथ से आंख से समन्वय विकसित करने वाले गेम और गतिविधियों में संलग्न होते हैं I माता–पिता का कहना है कि युवा एथलीटों में उनके बच्चे भी बेहतर सामाजिक कौशल विकसित करते हैं I आत्मविश्वास बढ़ाने से उनके लिए खेल के मैदान और अन्य जगहों पर अन्य बच्चों के साथ खेलना और बातचीत करना आसान हो जाता है I ऐसे आयोजन है जिसमें परिवार स्वयंसेवक भाग लेते हैं लेकिन सबसे बड़ी घटना है कानून प्रवर्तन मसाल रन जिसमें पुलिस प्रमुख, पुलिस अधिकारी, गुप्तसेवा और अन्य कानून शामिल होते हैं I स्पेशल ओलंपिक के लिए जागरूकता और धन जुटाने के लिए लागू करने वाले परिवर्तन कर्मी एक स्पेशल ओलंपिक प्रतियोगिता के आगे कानून प्रवर्तन अधिकारी या स्पेशल ओलंपिक विश्व ग्रीष्मकालीन या शीतकालीन खेलों के उद्घाटन समारोहों को साइट पर अधिकांश नियोजित मार्ग के साथ अंतराल में मशाल लेकर चलते हैंI वे मसाल को एक स्पेशल ओलंपिक एथलीट को सौंपते हैं जिससे खेलों की शुरुआत होती है I

**स्पेशल ओलंपिक खेलों के प्रकार**

स्पेशल ओलंपिक मौसम के अनुरूप दो प्रकार के होते है शीत ऋतु एवं ग्रीष्म ऋतु में आयोजित होते है I जो निम्न है –

**A. शीत ऋतु** – स्पेशल ओलंपिक खेल शीत ऋतु में आयोजित किये जाते है I जिनमे अधिकांशतः बर्फ पर खेले जाने वाले खेलों के स्पर्धा होती है I इन खेलों में–

1. अल्पाइन
2. स्कीइंग
3. क्रास
4. कंट्री
5. स्कीइंग
6. फिगर
7. स्केटिंग आदि का आयोजन किया जाता है I

**B–ग्रीष्म ऋतु** – स्पेशल ओलंपिक खेल भी ग्रीष्म ऋतु में आयोजित किये जाते है I यह पहली बार 1896 में आयोजित किया गया था I यह एक मल्टी स्पोर्ट इवेंट आयोजन है, जो चार साल में एक बार अलग – अलग शहरों में किया जाता है I प्रत्येक ओलंपिक आयोजन में स्वर्ण पदक प्रथम स्थान पर दिया जातें है, दुसरे स्थान पर रजत पदक से सम्मानित किया जाता है जबकि तीसरे स्थान पर कांस्य पदक प्रदान किये जाते है इन खेलों में तीरंदाजी बैडमिंटन, बास्केटबाल, नौकायन शूटिंग आदि का आयोजन किया जाता है I

स्पेशल ओलंपिक में 30 से अधिक ओलंपिक प्रकार के व्यक्तिगत और टीम खेल हैं जो बौद्धिक अक्षम लोगों के लिए सार्थक प्रतिक्षण और प्रतियोगिता के अवसर प्रदान करते हैं I जो इस प्रकार है –

1. एथलेटिक्स (ट्रैक एंड फील्ड)
2. वालीबॉल
3. बैडमिंटन
4. बोके
5. बास्केटबॉल
6. बालिंग
7. क्रिकेट
8. साइकिलिंग
9. घुड़सवार
10. फिगर स्केटिंग
11. फ्लोरबॉल
12. फ्लोर हांकी

13. फुटबॉल सांकर
14. गोल्फ़
15. जिमनास्टिक : कलात्मक और लयबद्ध
16. 16. हैण्डबोल
17. जूडो
18. क्याकिंग
19. नेटबॉल
20. पावर लिफ्टिंग
21. रोलर स्केटिंग
22. सेलिंग
23. स्नोबोर्डिंग
24. स्कीईंग अल्पाइन और क्रॉस कंट्री
25. सॉफ्ट बॉल
26. स्पीड स्केटिंग : शॉर्ट–ट्रैक
27. स्विमिंग : पूल और ओपन वॉटर
28. टेबल टेनिस
29. टेनिस
30. ट्रायथलॉन I

स्पेशल ओलंपिक खेल और खेल से जुड़े अन्य कार्यक्रमों में मोटर एक्टिविटी ट्रेनिंग प्रोग्राम और बीच वाली बाल शामिल है I खेल की उपलब्धता स्थान और मौसम पर निर्भर कर सकती है I स्पेशल ओलंपिक प्रतियोगिताओं और अन्य खेल संगठनों के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर यह है कि सभी क्षमता स्तरों के एथलीटों को भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है I प्रतियोगिताओं को संरक्षित किया जाता है ताकि एथलीटो को समान विभाजनों में समान क्षमता के अन्य एथलीटों के साथ प्रतिस्पर्धा करें I एथलीट की छमता स्पेशल ओलंपिक प्रतियोगिताओं को विभाजित करने में प्राथमिक कारक है I एक एथलीट या टीम की छमता एक पूर्व प्रतियोगिता से एक प्रवेश स्कोर या प्रतियोगिता में ही प्रारंभिक घटना के परिणाम से निर्धारित होता है I प्रतियोगिताओं में प्रत्येक कार्यक्रम में पहले दूसरे और तीसरे स्थान के विजेताओं को पदक प्रदान किए जाते हैं और आठवें स्थान से चौथे स्थान पर रहने वाले एथलीटों को रिबन प्रदान किए जाते हैं I

**खेल का महत्व एवं उद्देश्य**

1) व्यक्तित्व का विकास करना
2) सामाजिकता की भावना जागृत करना
3) मूल प्रवृत्तियों का साधन
4) भावी जीवन के लिए तैयार करना
5) नैतिक गुणों का विकास करना
6) नागरिकता के गुणों को उत्पन्न करना
7) सांस्कृतिक कार्य
8) पथ प्रदर्शन का कार्य

बौद्धिक अक्षम बच्चों को शिक्षा प्रदान करने हेतु खेल विधि के माध्यम का प्रयोग करना चाहिए जैसे बौद्धिक अक्षम बच्चों को सिखाने हेतु खिलौनों के साथ खेलना, बस चलाना (आउटडोर गेम खेलना) आदि द्वारा बच्चों के मोटर कौशल में सुधार कर सकते है पजल्स सृजनात्मकता खेल प्ले – मॉडलिंग आदि के द्वारा उनकी कल्पना शक्ति और रचनात्मकता को बढ़ा सकते है I बौद्धिक अक्षम बच्चों के लिए मरिया मॉंटेसरी प्रतिपादित मॉंटेसरी पद्दति एवं फ्रोबेल द्वारा प्रतिपादित खेल विधि का उपयोग बच्चों के प्रशिक्षण में किया जा सकता है बच्चों को भिन्न– भिन्न प्रकार के आकारों के गुटके जैसे गोला, घन, त्रिभुज आदि के द्वारा खेल, खेल में पजल द्वारा उन्हें इन सभी का प्रत्यय सिखाया जा सकता है I बौद्धिक अक्षम बच्चों के संचार एवं सामाजिक अंतःक्रिया में खेलमहत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है I दिव्यांग बच्चों के लिए दो प्रकार के खेल आयोजित किये जाते है I पैरालाम्पिक खेल और स्पेशल ओलम्पिक खेल

- स्पेशल ओलंपिक खेलों के प्रति जागरूक किया जाए जिससे वह अपने बच्चों को खेलों के लिए प्रेरित कर सके I
- शिक्षकों को स्पेशल ओलंपिक खेलों के प्रति प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि वे बच्चों को खेलों के लिए तैयार कर सकें I

**संदर्भ ग्रन्थ सूची**


1. जोसेफ. आर. ए. (2009), शिक्षा एवं पुनर्वास, समाकलन पब्लिसर्स, वाराणसी I
2. सिपरस्टीन, हरदा, पार्कर, हाईमैन और मैकगायर (2005), स्पेशल ओलंपिक खेलों के लिए शारीरिक विकास पर अध्ययन : बौद्धिक विकलांगता जर्नल, वाल्यूम 35 पेज 120 –140
3. वरन एफ. रेस. एस.(2013), स्पेशल ओलम्पिक एथलीटों और गैर विकलांग भागीदारों में ऐन्थ्रोप्रोमेट्री शारीरिक फिटनेस और कुशल प्रदर्शन पर एक स्पेशल ओलम्पिक यूनिफाइड स्पोर्टस साकर प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रभाव : रेस देव डिसएबिलिटी, वाल्यूम 16, पेज 69 – 709
4. Special - Olympics- General Rules - Amended - 2075 - 8-17
5. Sports - Rules - Article - 1-2017
6. Sports -Essentials …..les - 2018- v2
7. https://enm.wikipedia.org/wiki/special-olypics